International Indexed, Refereed Research Journal, ISSN-2250-253X, (Print), E-ISSN-2320-544X, ISSUE-11, VOL-I, Nov,2013

शोध पत्र- हिन्दी

ykd lLdfr % ,d lekt'kkL=h; leh{kk

* %kkuirki flg

* 'kk/k Nk=] oh- o- flg iokpy fo- fo- tkuij

लोक संस्कृति सम्पूर्ण मानव सस्कृति का एक अंग है। लोक संस्कृति की अवधारणा का प्रतिपादन राबर्ट रेडफील्ड ने किया, जिसका ग्रामीण समाज के अध्ययन में विशेष महत्व है। इसी अवधारणा के सन्दर्भ में रेडफील्ड1 ने अनेक अन्य अवधारणाओं को भी प्रस्तावित किया है। उन्होंने एक नगर, एक कस्बे, एक गाँव और एक जनजातीय ग्राम का तुलनात्मक रूप से अध्ययन किया है। इसी प्रकार आस्कर लेविस2 ने मैक्सिको तथा भारत के दो गाँवों का, ओपलन तथा सिंह3 ने पूर्वी उत्तर प्रदेश के दो गाँव का और रूथ वेनेडिक4 ने तीन जनजातीय समाजों का लोक संस्कृति के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया।

सामान्यतः लोक संस्कृति और संस्कृति को एक ही अर्थ में लिया जाता है अथवा लोक संस्कृति को ग्रामीण, जनजातीय अथवा पिछड़े हुए अंचलों की संस्कृति की संज्ञा दी जाती है। मानव–शास्त्रियों ने लोक सस्कृति का विशेष अध्ययन किया है। इस सन्दर्भ में उनके खोजपूर्ण तथ्य काफी महत्वपूर्ण है। लोक संस्कृति अर्थात folk culture का folk शब्द ऐंग्लोसेक्शन में folk, डच भाषा में volc, जर्मन में volk कहा गया है, जिसका अर्थ किसी आदियुगीन सामाजिक व राजनीतिक संगठन से है।

डॉ0 के0वी0 दास के शब्दों में "लोक के अन्तर्गत उन सभी व्यक्तियों को सम्मलित किया जा सकता है जो किसी न किसी आदियुगीन अथवा पिछड़ी हुई दशाओं में रहते हैं और आधुनिक तथा प्रगतिशील प्रभावों की सीमाओं से पृथक रहते हैं।"

इसी प्रकार जार्ज एम0 फोस्टर5 ने संस्कृति को परिभाषित करते हुए लिखा है, " लोक संस्कृति को जीवन के सामान्य तरीकों के रूप में देखा जा सकता है, जो एक क्षेत्र विशेष में बहुत से गाँवों, कस्बों व नगरों के कुछ या सभी लोगों की विशेषता के रूप मे है और लोक समाज उन व्यक्तियों के रूप में है जिसकी एक लोक संस्कृति है।

लोक संस्कृति के बारे में रेडफील्ड़ ने 1526 में टेपोजलान के गाँव का अध्ययन किया और एक नवीन दिशा प्रदान की तभी से सामुदायिक अध्ययनों के इतिहास में यह विशेष महत्वपूर्ण है कि इसमें ग्राम समाज की। प्रकृति पर और कम से कम निहित रूप में ग्राम्य नागरिक स्वातन्त्र्य पर रेड फील्ड़ के विचार पहली बार मिलते हैं।"

डॉ0 भोला नाथ तिवारी के अनुसार "'folk' शब्द, ऐंग्लोसेक्शन 'folc' का विकसित रूप है। जो जर्मन में 'volk' हो गया। 'volk' का अर्थ है किसी सभ्यता से दूर रहने वाली पूरी जाति, परन्तु जब इसका अध्ययन किया गया तब इसमें 'lore' शब्द जोड़ दिया गया, जो ऐंग्लोसेक्शन शब्द 'lor' से बना हुआ है, जिसका अर्थ है– वह जो सीखा जाय। इस प्रकार फोक्लोर का अर्थ हुआ, असंस्कृत लोगों का ज्ञान।"

फोस्टर6 ने इसे लोक संस्कृति कहा है। उन्होंने इसकी परिभाषा इस प्रकार प्रस्तुत की है– "लोक संस्कृति को जीवन के अन्य सामान्य तरीकों के रूप में देखा जा सकता है जो एक क्षेत्र विशेष के बहुत से गाँवों, कस्बों व नगरों के कुछ या सभी लोगों की विशेषता के रूप में है और लोक समाज उन व्यक्तियों के एक संगठित समूह के रूप में है, जिसकी एक लोक संस्कृति है।"

इस प्रकार समाज में विशिष्ट श्रेणियों का अन्तर प्रचीन काल से रहा है। प्रत्येक की विशिष्ट सांस्कृतिक उपलब्धियाँ कला, संगीत, बोली और रीति–रिवाज रहे हैं। इन्हें लोक संस्कृति कहा जा सकता है। श्री बलदेव उपाध्याय7 के शब्दों में, "शिष्ट संस्कृति ज्ञान के लिए जितनी महत्वपूर्ण है उससे अधिक लोक संस्कृति के वैभव के लिए"। इस प्रकार स्पष्ट है कि लोक समाज की संस्कृति लोक संस्कृति है। यह नगरीय संस्कृति से भिन्न होती है। भूपेन्द्र नाथ दत्ता के शब्दों में, "प्रागैतिहासिक काल में 'लोग' सर्वत्र जनों में विभक्त था। अतः जीवन व्यापार में सर्वत्र एकरसता नहीं जा पायी थी। प्रत्येक जन अपनी आर्थिक परिस्थितिवश बढ़ रहा था। वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सामान तैयार करता था, इस प्रकार तैयार सामान उस जन का सांस्कृतिक उत्पादन होता था।"

ykd lLÑfr dh fo"k;&oLrq %

1- ykdokrk& लोकसंस्कृति में लोकजीवन के सभी पक्ष शामिल रहते हैं। लोकवार्ता शब्द "फोकलोर" का हिन्दी रूपांतरण है। लोकवार्ता के विस्तार को रखांकित करते हुए

टी0 शिप्ले ने लिखा है, "सभी प्रकार के लोक गीत, लोक कथायें, अन्ध विश्वास, स्थानीय गाथाएँ, लाकोक्तियाँ और पहेलियाँ लोक वार्ता में सम्मिलित है।" सोफिया वर्न8 ने भी लिखा है कि, "यह एक जाति बोधक शब्द के रूप में प्रचलित हो गया है, जिसके अन्तर्गत पिछड़ी जातियों में प्रचलित अथवा अपेक्षाकृत समुन्नत जातियों के असंस्कृत प्रकृति के चेतन तथा जड़ जगत के सम्बन्ध में, आदिम तथा असभ्य विश्वास इसके क्षेत्र में आते हैं।"

2- ykdkpkj& लोकाचार सामाजिक संरचना के अंग होते हैं और गाँव के सांस्कृतिक वातावरण का सृजन करते हैं। इनकी प्रकृति सामूहिक होती है और इनका पालन करना समूह के लिए कल्याणकारी माना जाता है।

मैकाइवर व पेज9 लोकाचार की परिभाषा करते हुए कहते हैं कि, "जब जनरीतियाँ अपने समूह के कल्याण की भावना तथा सही और गलत के मापदण्ड मिला देती है, तो वे लोकाचार में बदल जाती है।"

3- ykd uR;& लोक नृत्य का भारतीय ग्रामीण संस्कृति में विशेष महत्व है, लोक नृत्य का महत्व विभिन्न पर्व एवं त्योहार पर होता है। ग्रामीण जन जीवन में मनोरंजनार्थ लोक नृत्य का विशेष महत्व है।

4- nsoh&nsork& धर्म का सम्बन्ध मनोवैज्ञानिक विचारधारा से है। लोक–संस्कृति से जुड़े समाज धर्म परायण ही नहीं धर्मभीरू भी है। धर्म अलौकिक सत्ता से विश्वास और उस सत्ता को प्रसन्न करने के लिए किया जाने वाला पूजा, प्रार्थना आदि कार्य है। इसमें जड़ पदार्थों को भी जीवित सत्ता मानने का आदिम विश्वास निहित है।

5-Hkwr&izsr& ग्रामीण समाजों में अशिक्षा और अंधविश्वास का व्यापक साम्राज्य है। यही कारण है कि गाँव के लोग भूत–प्रेत आदि में आस्था और विश्वास रखते हैं। भूत–प्रेतों में विश्वास और उनके प्रति लोगों का भय ग्रामीण जीवन के आदिम विश्वासों का प्रतीक है।

उचित चिकित्सा के अभाव में हमारे समाज की विभिन्न जातियाँ भूत–प्रेत में विश्वास रखती है। आदिम जाति जैसे कीर, गोड़, भील, संथाल, कोल और किरकू इत्यादि।

ykd laLÑfr dh fo'ks"krk&

लोक संस्कृति के सन्दर्भ में पं0 रविनाथ पाण्डेय कहते हैं, "प्रत्येक भू–भाग की मिट्टी में पनपी वनस्पतियों के पत्ते और फल–फूल में विशेष गंध होती है, जो किसी अन्य भू–भाग में उगे हुए फूल पत्तियों की गंध से भिन्न होने के कारण अपनी अलग विशेषता रखती है।"

इस परिपेक्ष्य में लोक संस्कृति व उससे जुड़े जनजीवन की कतिपय मौलिक विशेषताएँ निम्नलिखित है–

1- ykd laLÑfr ekSfyd ijEijk gS

लोक संस्कृति प्रत्यक्ष रूप से पुस्तकों पर आधारित नहीं है। यह मौखिक रूप में एक पीढी से दूसरी पीढी को हस्तान्तरित होती रहती है। इसी सत्य को उद्घाटित करते हुए पं0 हजारी प्रसाद द्विवेदी10 लिखते हैं"लोक संस्कृति के व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथियाँ नहीं है।"

2- O;kolkf;drk dk vHkko लोक संस्कृति के मूल में स्वान्तः सुखाय की प्रवृत्ति होती है। ग्रामीण परिवार या समुदाय मनोरंजन या धार्मिक भावों से प्रेरित होकर विभिन्न क्रिया–कलापों में भाग लेते हैं। भारतीय ग्रामीण कला पर यह बात पूरी तरह से लागू नहीं होती है। अनेक नाचने व करतब दिखाने वाली नर जाति, बारन के पंखे, डालियाँ आदि बनाने वाले मुसहर आदि एक गाँव से दूसरे गाँव में घूम कर अपनी कला का प्रदर्शन करती है व बदले में कुछ लाभ या पुरस्कारों को प्राप्त करती है, परन्तु उनका दृष्टिकोण व्यवसायिक नहीं होता है।

3-Ñ"kd thou ij vk/kkfjr लोक संस्कृति की इकाइयों–लोक साहित्य, लोक कला ओर नृत्य आदि का सृजन समाज की सामूहिकता से होता है। जो समाज लोक संस्कृति का सृजन करता है उसे कृषि जीवन की सामूहिक चेतना और सामूहिक व्यक्तित्व प्रकट होता है।

4- LFkkuh;rk

लोक संस्कृति तर्क व उद्देश्यपूर्ण विचारधाराओं से निर्मित नहीं होती बल्कि वह एक हीन विश्वासों एवं गतानुगतिक कारणों से निर्मित होती है। इसका वैश्विक आयाम नहीं बनता, न ही इसमें अभिजात परिष्कार होता है। वस्तुतः लोक संस्कृति में स्थानीयता का गुण भी प्रधान होता है।

5- ckf)d] /kkfeZd o uSfrd thou dh iz/kkurk

लोक संस्कृति अपने आप में बौद्धिक धार्मिक व नैथ्तकजीवन की दृष्टि से पूर्ण नहीं है। उसकी अभिजात सांस्कृतिक उप–संरचना के साथ अतः क्रिया होती रहती है।

6- ykd laLÑfr dk vfHkktkr laLÑfr ls vknku&inku कतिपय विद्वानों का मत है कि सांस्कृतिक गति सदैव ऊपर से नीचे की ओर होती है। अभिजात सांस्कृतिक तत्व ही नीचे पहुँचते–पहुँचते लोक संस्कृति के सांस्कृतिक तत्वों का आदान–प्रदान होता रहता है और यह चक्रीय रूप में होता रहता है।

7- dykRed fØ;kvksa esa lgHkkfxrk

लोक संस्कृति अन्तर्गत आने वाली कलात्मक क्रिया में सभी लोगों का सहभाग होता है। इसका तात्पर्य यह है कि लोक संस्कृति के अन्तर्गत दर्शक और कलाकार को अलग–अलग परिभाषित किया जा सकता है।

8- 0;kidrk

व्यापकता में संस्कृति की भावना दृष्टिगोचर होती है। वर्तमान पीढ़ी का दृष्टिकोण सांस्कृतिक स्वरूपों में उपेक्षापूर्ण रहा है। लोक संस्कृति में यद्यपि स्थानीय रंग पाया जाता है तथापि लोक संस्कृति को स्थानीय तथा संकुचित संस्कृति के रूप में परिभाषित करना उचित नहीं है। इसके फैलाव का क्षेत्र व्यापक नहीं है।

निष्कर्षतः लोक संस्कृति की विशेषताओं के अध्ययन से विदित होता है कि इसमें सरलता, सामूहिकता, सृजनात्मकता, अव्यावसायिकता, पारम्परिकता आदि गुणों समावेश होता है।

संदर्भ ग्रंथ

1 Redfield, R: Folk Culture of Uketon 1941
2 Oscar Lewis: Peasant culture in India and Maxico in villages, India 1935.
3 Opelar M.E. & Singh Rudra: To villages of U.P. 1952.
4 Benedict R.: Pattern of Culture 1935.
5 Foster George M.A.: What is Culture, American Anthropology, vol.55, page 104, page 40.
6 Foster George M.A.: What is Culture, American Anthropology, vol.55, page 104, page 40
7 डॉ. कृष्ण देव उपाध्यायः संस्कृत साहित्य का इतिहास, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, पृ0 40।
8 Barn, sofia: The Handbook of folk lore,p.20.
9 Maciver & Page: Society, p.20.
10 द्विवेदी हजारी प्रसादः सापेश के लोक संस्कृति विशेषांक से साभार